

खानपान की बदलती तस्वीर

लेखक - प्रयाग शुक्ल

खानपान की संस्कृति

- ▶ किसी स्थान पर मिलने वाला भोजन वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों ,प्राकृतिक संसाधन आदि पर आधारित होता है तथा उस माहौल में रहने की शक्ति देता है ।
- ▶ भोजन किसी जाति –स्थान आदि की परम्परा का हिस्सा होता है और उसका एक लम्बा इतिहास होता है ।

खानपान की संस्कृति

- ▶ पिछले कुछ समय में खानपान की संस्कृति में बदलाव आया है और खानपान की एक मिश्रित संस्कृति जन्म ले रही है ।
- ▶ “संस्कृति” का अर्थ “सीखा हुआ व्यवहार” होता है। कोई व्यक्ति बचपन से अब तक जो कुछ भी सीखता है, उदाहरण - खाने का तरीका, बात करने का तरीका, भाषा का ज्ञान आदि

मिश्रित संस्कृति से तात्पर्य-

- ▶ खानपान की मिश्रित संस्कृति से तात्पर्य है विभिन्न प्रांतों व देशों के व्यंजनों के अलग-अलग प्रकारों का मिला जुला रूप है।
- ▶ अब दक्षिण का सांभर –डोसा दिल्ली में हर जगह आसानी से मिलता है

मिश्रित संस्कृति के कारण

- ▶ भूमंडलीकरण के कारण
- ▶ उद्योग धंधों के विकास के कारण
- ▶ नौकरियों व तबादलों के कारण
- ▶ अन्य संस्कृति से बढ़ती पहचान के कारण
खानपान की मिश्रित संस्कृति का विकास हुआ है ।

खानपान की मिश्रित संस्कृति के लाभ हैं –

- ▶ भिन्न प्रदेशों की संस्कृतियों को जानने और समझने का मौका मिलना।
- ▶ हमें अलग-अलग प्रकार के व्यंजनों को खाने का मज़ा मिलता है।
- ▶ इससे भारत की एकता बनी रहती है।

खानपान की मिश्रित संस्कृति के हानि हैं –

- ▶ खानपान के इस बदलाव से स्थानीय व्यंजनों का अस्तित्व खतरों में है ।
- ▶ स्थानीय व्यंजनों की लोकप्रियता कम हो रही है
- ▶ यह हमारे स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक नहीं है।
- ▶ नई पीढ़ी स्थानीय व्यंजनों के बारे में जानती ही नहीं है।
- ▶ खाद्य पदार्थों में शुद्धता की कमी होती जा रही है।